व्यवसाययोजना

हथकरघा

(शॉल , स्टॉल व मफ़लर बुनाई)

वीर नाथ स्वयं सहायता समूह (न्यूल उप समिति)

जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	न्यूल
उप-समिति	**न्यूल**
ग्राम पंचायत	**न्यूल**
वन परिक्षेत्र	**वन्यप्राणी परिक्षेत्र,कुल्लू**
वनमंडल	**वन्य प्राणी मंडल कुल्लू**
वनवृत्त	GHNP Circle , शमशी

हिमाचल **प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधर परियोजना**
(जाईका वित्तपोषित)

विषय –सूची

क्र0सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	परिचय	3
2	कार्यकारिणी सारांश	3-5
3	स्वयं सहायता समूह/समान रूची समूह का विवरण व सूची	5-6
4	गांव की भौगोलिक स्थिति का विवरण	6
5	आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण	6-7
6	उत्पादन की प्रक्रियाऐं	7-8
7	उत्पादन नियोजन	8
8	विक्रय तथा विपणन	9
9	सदस्यों के मध्य प्रबन्धन का विवरण	10
10	शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)	10-11
11	सम्भावित जोखिम व उनको कम करने के उपाय	11
12	व्यवसाय योजना की अर्थव्यवस्था का विवरण	12
13	अर्थव्यवस्था का सारांश	12
14	अनुमान	13
15	उद्यम हेतूलाभ– लागत विश्लेषण	13
16	धन की आवश्यकता	13
17	धन की आवश्यकता का नियोजन	14
18	ऋण वापिस का किश्तवार नियोजन	14
19	समूह के नियम	15-16
20	समूह की सहमति तथा प्रधान, जैव विविधता उपसमिति लोट का अनुमोदन	17
21	समूह के सदस्यों के फोटो	18-19

1. परिचय

हथकरघा उद्योग प्राचीनकाल से ही हाथ के कारीगरों की आजीविका प्रदान करता आया है। भारत में हथकरघा ऊद्योग समय के साथ सबसे महत्वपूर्ण कुटीर व्यापार के रूप में उभरा है। हथकरघा बुनकर कपास, रेशम और ऊन के शुद्ध रेशों का उपयोग कर उत्पाद तैयार करते रहे हैं। हैंडलूम उद्योग भारत की सांस्कृतिक विरासत का आवश्यक अंग है। पहले कुल्ल्वी लोग सादे शॉल बुनते थे लेकिन हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के रामपुर से बुशहरी शिल्पकार के आने के बाद पैटर्न वाले हथकरघा का चलन अस्तित्व में आया। बहुत समय पहले तक पुरुष और महिलाएं अपने घरों में पारंपरिक खड्डियों (Pitlooms) में बुनाई का काम करते थे और सार्दियों के लिए परिवार के लिए गर्म कपड़ों की स्वयं व्यवस्था करते थे। उसके बाद हथकरघा का चलन शुरू हुआ, यह संभवत: ब्रिटिश काल में उनके प्रभाव के कारण हुआ। कुल्लू की पारंपरिक बुनाई उत्पादों में दोडू, पट्टू, पट्टी (Tweed), शाल, टोपी के बार्डर व मफलर आदि आते हैं। सत्तर के दशक के पश्चात् पर्यटकों के बढ़ते आगमन व उसमे लगातार होती वृद्धि व पर्यटकों के कुल्लू हस्तशिल्प उत्पादों में रूचि इस कार्य में लगे लोगों खासकर महिलाओं के लिए, जो इस क्षेत्र के बुनकरों का लगभग 70% हैं, की आजीविका का साधन बनता गया। मैदानी क्षेत्रों में बने पावरलूम उत्पादों से इस क्षेत्र में विभिन्न कार्य कर रहे शिल्पियों और व्यवसाइयों को अपने उत्पादों के विपणन में कठिनायाँ आ रही है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार समय समय पर इस क्षेत्र को प्रोत्साहन देने में प्रयासरत है। अभी हाल ही में भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर नग्गर के शरण गांव को हैंडलूम क्रॉफ्ट विलेज में शामिल किया गया है। इस गांव में मूलभूत सुविधाओं के सृजन तथा सौंदर्यीकरण पर लगभग 1.40 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जाएगी। गांव में भव्य हैंडलूम सुविधा केंद्र का निर्माण किया जाएगा। इसमें तैयार किए गए उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा संचालित तथा जाइका वित्तपोषित " हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना" (PIHPFEM&L) के माध्यम से पारिस्थितिकी तन्त्र प्रबंधन के साथ साथ वनों के पास रहने वाले समुदायों की आजीविका में सुधार के प्रयास किये जा रहे हैं। महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन कर के उनकी रूचि के अनुसार गतिविधियों को चुन कर इन समूहों की सहायता की जा रही है। इस प्रकार की गतिविधियों में एक गतिविधि हथकरघा, जो कुल्लू का पारंपरिक शिल्प है, में भी महिलाओं ने काम करने की इच्छा जताई है। न्यूल जैवविविधता प्रबंधन कमेटी की "न्यूल" उप समिति के " वीर नाथ " स्वयं सहायता समूह ने हथकरघा की गतिबिधि का चयन किया है जिसके हर पहलू को ध्यान में रख कर इस व्यवसाय योजना को बनाया गया है।

2. कार्यकारिणी सारांश

हिमाचल प्रदेश के पश्चिम हिमालय में स्थित है। यह राज्य कुदरती सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक व धार्मिक धरोहर से भरपूर है। राज्य में विविध पारितंत्र, नदियाँ व घाटियाँ पाई जाती है। इसकी आबादी 70 लाख के करीब है। इसका भौगोलिक क्षेत्र 55673 वर्ग कि० मी० है। हिमाचल प्रदेश में शिवालिक पहाडियों से लेकर मध्य हिमालय का क्षेत्र के ऊँचाई व और ठंडे जोन का क्षेत्र पाया जाता है। राज्य के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में से 6 जिले में हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन और आजीविका सुधार परियोजना जाईका (JICA) के सहयोग से चलाई जा रही है। जिसमे कुल्लू ज़िला भी शामिल है।

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (जाईका वित्तपोषित) प्रारंभ होने पर जैवविविधता प्रबंधन कमेटी न्यूल की "न्यूल" उप समिति की सूक्षम योजना बनाई गयी है। वन विकास समिति के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व बागवानी है परन्तु प्रत्येक परिवार

की औसत भूमि चार बीघा से कम है इसके इलावा सिंचाई के कोई भी साधन नहीं है। अत: अधिकतर लोग जिले के अंदर व जिले के बाहर मजदूरी कमाने जाते हैं तथा सिचांई की उचित व्यवसाय ना होने के कारण लोगों को उनके आय में आपेक्षित बढोतरी नहीं हो पा रही है। यहाँ के लोग मुख्यत: गेहूं, मक्की, जौ व दालों की खेती करने के साथ सेब, प्लम, नाशपति व खुमानी इत्यादि बागवानी फसले उगाते हैं। आय के वैकल्पिक साधन ना होने के कारण मजदूरी के लिए घर से वाहर जाना पड़ता है। इस समस्या उबरने के लिए स्वयं सहायता समूह जय वीर नाथ ने शॉल, स्टॉल और मफलर इत्यादि का कार्य करके अपनी आजीविका बढाने का निर्णय लिया है। आजीविका सुधार योजना गतिविधि के लिए स्थानीय स्वयं सहायता समूह बनाये गए हैं इन में से वीर नाथ स्वयं सहायता समूह का 27 नवम्बर, 2020 को गठन किया गया है। इस समूह में कुल 18 महिला सदस्य है जिन में से पांच अनुसूचित जाति व तेरह सामान्य श्रेणी से हैं। इस समान रुची समूह ने विस्तार से चर्चा करने पर शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने व विपणन करने का निर्णय किया है।

इस समूह में कुछ सदस्य शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बुनाई का कार्य पहले से ही कर रही है । उन का अनुभव व हस्तकला शेष सदस्यों कअ मार्गदर्शन करेगा, यद्यपि परियोजना की और से सभी को उचित प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। उत्पादन के बाद प्रारंभ में विपणन करने के लिए स्थानीय दुकानदारों या थोक विक्रेताओं के साथ समूह को जोड़ा जाएगा। दक्षता व उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ विपणन की संभावनाओं को और अधिक स्तर में खोजने की और इसमें विस्तार की आवश्यकता होगी । अभी हाल ही में मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश ने हथकरघा दिवस पर बताया था कि प्रदेश सरकार हिमाचल के हथकरघा उत्पादों की विक्री फ्लिपकार्ट के माध्यम से करने हेतु वार्ता कर रही है । उम्मीद है कि इस प्रकार के प्रयासों से स्वयं सहायता समूहों की आजीविका के साधनों में निरंतर सुधार हो सकेगा । समूह के सदस्य सामूहिक तौर पर ज्यादा मांग में उत्पादन करके अपनी आजीविका बढा सकती है। समूह ने तय किया है कि पूंजीगत लागत हेतु परियोजना की सहायता से तथा शेष 25% पूंजीगत व्यय को नकदी कैश के रूप इकट्ठा करके देंगे। समूह के सदस्य बैंक से ऋण लेने में हिचकिचा रहीं है अत: प्रथम चक्र में 50% उत्पादन करेंगे तथा इससे कमाए गए लाभांश व मजदूरी से दुसरे चक्र के लिए आवर्ती व्यय करेंगे। शेष लाभांश को आपस में बटवारा करेंगे। अगले चक्र के बाद सभी सदस्य समान रूप से लाभांश व मजदूरी को आपसी सहमती से बंटवारा करेंगे।

शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने के लिए कच्चा माल व खड्डीयां स्थानीय बाज़ार में उपलब्ध है तथा विपणन की भी स्थानीय स्तर पर अपार सम्भावना है क्योंकि कुल्लू घाटी में लगभग पूरी साल पर्यटकों का आना जाना रहता है। कुल्लू के शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, टोपी और मफलर आदि की सुदरता भारतवर्ष में विख्यात है अत: पर्यटक घर लोटते समय अपने परिवार व मित्रों के लिए उपहार हेतु प्रचुर मात्रा में खरीददारी करते है। समूह के सदस्यों को परियोजना शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा पूंजीगत व्यय के 50% अथवा 75% के बराबर सहायता राशी भी परियोजना देगी तथा खड्डीयों को गाँव में पहुंचा कर स्थापित भी करेगा। यदि समूह में सभी महिलाएं अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति अथवा निर्धन वर्ग से सम्बन्ध रखती हैं तो वह समूह परियोजना से पूंजीगत व्यय का 75% अंशदान प्राप्त कर सकती है । इसके अतिरिक्त 1,00,000/- परिक्रामी निधि (Revolving Fund) दिया जाएगा। समूह ने तय किया है कि सभी सदस्य नियम व शर्तो के हिसाब से तथा आपसी सहमति से कार्यो व इससे होने वाले लाभों का आपसी बंटवारा करेंगे।

यह व्यवसाय योजना बनाने के लिए श्री जूगत राम उत्पादन तकनीकी सहायक रिटायर्ड (हिम बुनकर) से हर पहलु पर चर्चा की गयी । श्री जूगत राम से विस्तार से चर्चा करने के बाद उनकी सलाह के अनुसार व्यवसाय योजना बनाई गयी है। व्यवसाय योजना बनाते समय विशेषज्ञ ने समूह के सदस्य की सख्यां शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बनाने की क्षमता तथा कच्चे माल की उपलब्धता मांग व विपणन को ध्यान में रखकर 75 शॉल, 120 स्टॉल और 135 मफलर प्रतिमाह तैयार करने की व्यवसाय योजना बनाई है। बॉर्डर की भी बाज़ार में खफत व मांग है परन्तु समूह इस उत्पाद में कार्य करने

के बारे कुछ समय पश्चात् निर्णय लेगा। समूह औसतन वर्षभर 4 से 5 घंटे प्रतिदिन का समय निकालकर उपरोक्त उत्पादों का उत्पादन करेगा। मार्च के मध्य से नवम्बर तक खेती बाड़ी के कार्यों से कम समय मिलेगा परन्तु शेष महीनों में इस गतिविधि के कार्यों के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध होगा। इस सबंध में श्री जूगत राम द्वारा मोके पर शाल, स्टॉल और मफलर का प्रशिक्षण मोके पर जा कर प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा शुरू में क्वालिटी कण्ट्रोल, डिज़ाइन बनाने व विपणन में भी इनकी सेवाएँ लेना प्रस्तावित है।

समूह में सम्मिलित सदस्यों का ब्यौरा निम्न प्रकार से है :

क्रमांक	लाभार्थी का नाम व पता सुश्री/श्रीमती	पिता/ पति का नाम श्री	पद	गांव	आयु	लिंग	श्रेणी	सम्पर्क
1	बेगमू देवी	चौवे राम	प्रधान	न्यूल	36	स्त्री	समान्य	9805811431
2	रेशमा देवी	मोहर सिंह	उपप्रधान	न्यूल	21	स्त्री	समान्य	8580513052
3	शालू देवी	पप्पू	कोषाध्यक्ष	न्यूल	26	स्त्री	समान्य	8580989095
4	निरमा देवी	जालम राम	सचिव	न्यूल	39	स्त्री	समान्य	8091759139
5	द्रोपता देवी	प्रकाश	सदस्य	न्यूल	27	स्त्री	समान्य	9418490130
6	चंद्रकाला	रमेश कुमार	सदस्य	न्यूल	36	स्त्री	समान्य	8219707415
7	रोशनी	सोम देव	सदस्य	न्यूल	31	स्त्री	समान्य	8091727174
8	हमापति	जोगिन्दर	सदस्य	न्यूल	32	स्त्री	समान्य	8091721125
9	डोलमा	रोशन सिंह	सदस्य	न्यूल	30	स्त्री	समान्य	8988301951
10	कृष्णा देवी	राजेन्द्र सिंह	सदस्य	न्यूल	32	स्त्री	अनु० जाति	8988389190
11	पूजा देवी	गिरिधारी	सदस्य	न्यूल	19	स्त्री	अनु० जाति	9817371611
12	कमलेश कुमारी	हिरदे राम	सदस्य	न्यूल	32	स्त्री	अनु० जाति	8580927997
13	मान दासी	रोडिया राम	सदस्य	न्यूल	45	स्त्री	अनु० जाति	9805438137
14	पूनमा	बलवंत	सदस्य	न्यूल	31	स्त्री	अनु० जाति	8219391151
15	दीपा	जय सिंह	सदस्य	न्यूल	18	स्त्री	समान्य	9015022661
16	डोलमा	भवनेश्वर	सदस्य	न्यूल	32	स्त्री	समान्य	8580538874
17	आशा	पुरखु राम	सदस्य	न्यूल	27	स्त्री	समान्य	8580518821
18	फुला	पिताम्बर लाल	सदस्य	न्यूल	29	स्त्री	समान्य	9418827614

3 स्वयं सहायता समूह/समान रूची समूह का विवरण

3.1	स्वयं सहायता समूह का नाम	जय वीर नाथ
3.2	जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	न्यूल
3.3	उपसमिति का नाम	न्यूल
3.4	वन परिक्षेत्र	वन्यप्राणी, कुल्लू
3.5	वन मण्डल	वन्यप्राणी, कुल्लू
3.6	गांव	न्यूल
3.7	विकास खण्ड	कुल्लू
3.8	जिला	कुल्लू
3.9	समूह के कुल सदस्यों की संख्या	18 महिलाएं

3.10	समूह के गठन की तिथि	27.11.2020
3.11	समान रूचि समूह की मासिक बचत	100/-
3.12	बैंक का नाम और शाखा जंहा समूह का खाता संचाालित	सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक, बजौरा
3.13	बैंक खाता संख्या	9805811431
3.14	समूह की कुल बचत	19500/-
3.15	समूह द्वारा सदस्यों को दिया गया ऋण	अभी तक नही
3.16	कैश क्रैडिट सीमा समूह सदस्यों द्वारा वापस किया गया ऋण की स्थिति	अभी नहीं लिया

4. गांव की भौगोलिक स्थिति

4.1	जिला मुख्यालय से दूरी	25 कि0मी0
4.2	मुख्य सड़क से दूरी	1 से 2 km लिंक रोड पर
4.3	स्थानीय बाजार का नाम और दूरी	कुल्लू 25, भुन्तर 14 कि0मी0
4.4	मुख्य बाजार से दूरी और नाम	कुल्लू 25 कि0मी0
4.5	अन्य प्रमुख शहरों और कसबों से दूरी	मनाली 65 कि0मी0 भुन्तर 14 कि0मी0
4.6	बाजार/बाजारों से दूरी जहां पर उत्पादन की बिक्री की जायेगी	कुल्लू 25 कि0मी0 मनाली 65 कि0मी0 भुन्तर 14 कि0मी0
4.7	ग्राम के सम्बन्ध में अन्य कोई विशिष्ठता जो समूह द्वारा चयनित आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित हो	1-2 सदस्य पहले से हथकरघा बुनाई से अवगत हैं

5. आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण

5.1	उत्पाद का नाम	शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, और मफलर
5.2	उत्पाद की पहचान की पद्वति	समूह की कुछ सदस्य अपने स्तर पर पहले से ही शाल, स्टाल व बॉर्डर बुनाई का कार्य करती है व उत्पादित समान को स्थानीय बाजार में भारी मांग है। समूह में उत्पादन व विपणन करने पर अतिरिक्त आय की आपार सभावना है।
5.3	समान रूचि समूह के सदस्यों की सहमति	हां (सहमति पत्र सलंग्न है।)

6. उत्पादन की प्रक्रियाओं का विवरण

सर्व प्रथम समान रूची समूह के सदस्यों को परियोजना द्वारा शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाऐगा। प्रशिक्षण के उपरान्त समूह के सदस्यों द्वारा उत्पाद तैयार करने में निम्न प्रक्रिया की जाऐगीः–

1- शाल, स्टॉल, का ताना व वाना, वार्पिंग मशीन के द्वारा खरीद के स्थान पर ही विक्रेता द्वारा लगवाऐगें। इससे समय और उत्पादों की मज़दूरी दर का खर्चा कम होगा।

2- समूह में सभी सदस्य आपस में कार्य का बटवारा करके शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बनाने का कार्य करेगें।

3- सदस्य बारी–बारी विपणन करेगें व कच्चा माल भी लाऐंगे।

4- समूह के सदस्य प्रति दिन 4 से 5 घण्टे कार्य करेगें।

5- प्रत्येक सदस्य द्वारा समूह के कार्यों पर लगाये समय का व्योरा रखा जायेगा I

प्रशिक्षण के उपरान्त समूह द्वारा निम्नलिखित उत्पादों का कार्य किया जाऐगा। जिसका विवरण इस प्रकार से है :

1. शॉल

कुल्लू शाल अपने ज्यामितीय पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। विशिष्ट कुल्लू शॉल के दोनों सिरों पर ज्यामितीय डिजाइन होते हैं। ज्यामितीय डिजाइनों के अलावा, शॉल फूलों के डिजाइनों में बुने जाते हैं, जो केवल कोनों पर या सीमाओं पर ही होते हैं। प्रत्येक डिज़ाइन में एक से 8 रंग हो सकते हैं। परंपरागत रूप से, चमकीले रंग, जैसे लाल, पीले, मैजेंटा गुलाबी, हरे, नारंगी, नीले, काले और सफेद रंग का इस्तेमाल पैटर्निंग के लिए किया गया था और सफेद, काले और प्राकृतिक भूरे रंग को इन शॉलों में आधार के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन वर्तमान समय में ग्राहकों की मांग को ध्यान में रखते हुए इन चमकीले रंगों को धीरे–धीरे पेस्टल रंगों से बदला जा रहा है। विभिन्न रंगों में रंगे मिल स्पून यार्न का उपयोग जमीन के लिए किया जाता है, जबकि सीमा में पैटर्न के लिए ऐक्रेलिक रंगों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किया जाता है। ये शॉल भेड़ की ऊन, अंगोरा, पश्मीना, याक ऊन और हाथ से बनी सामग्री में उपलब्ध हैं। शॉल की कीमत ऊन की गुणवत्ता और उसमें इस्तेमाल किए गए पैटर्न की संख्या और चौड़ाई पर निर्भर करती है। इनमे लगने वाले धागों की किसम, रंग, डिज़ाइन आदि का चयन बाज़ार की मांग पर निर्भर करेगा। विभिन्न डिजाईनों की शॉले 9 सदस्यों द्वारा तैयार की जाएगी। अनुमान है कि प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 4 दिन में 1 शॉल तैयार कर सकती है। 9 सदस्य एक महीने में 75 शॉल बना सकते हैं।

2. स्टॉल

स्टोल एक महिला का शॉल है, विशेष रूप से महंगे कपड़े का औपचारिक शॉल। स्टोल का उपयोग परिष्कृत और फैशन के प्रति जागरूक महिलाएं करती हैं। इसे शॉल की तरह शरीर के चारों ओर लपेटा जा सकता है या कंधों से लटकाया जा सकता है। एक स्टोल आमतौर पर शॉल की तुलना में लम्बाई व चौड़ाई में छोटा होता है। विभिन्न डिजाईनों की स्टॉल 2 सदस्यों द्वारा तैयार किया जायेगा I प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 2 दिन में 1.3 स्टॉल तैयार कर सकती है इस प्रकार एक सदस्य एक महीने में बीस और 6 सदस्य एक महीने में 120 स्टॉल तैयार कर सकते हैं।

3. मफलर

विभिन्न अवसरों पर विशिष्ट लोगों को सम्मानित करते समय टोपी और मफलर भेंट करना पहाड़ों की परंपरा में सम्मिलित है । विभिन्न डिजाईनों के मफलर 3 सदस्यों द्वारा तैयार किया जायेगा। प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घंटे कार्य करने पर 2 दिन में 3 मफलर तैयार कर सकती है। इस प्रकार 3 सदस्य एक महीने में 135 मफ़लर बनायेंगी।

7 उत्पादन हेतु नियोजन का विवरण

7.1	उत्पादन चक्र (दिनों में) 30 दिन प्रतिदिन 4–5 घंटे कार्य करेगें	75 शॉल 120 स्टॉल 135 मफलर
7.2	प्रति चक्र कार्यकताओं की आवश्यकता (संख्या)	9 सदस्य शॉल के लिए 6सदस्य स्टॉल के लिए 3 सदस्य मफलर के लिए **कुल 19 सदस्य**
7.3	कच्चे माल का स्त्रोत	कुल्लू, भुन्तर
7.4	अन्य संसाधनों का स्त्रोत	कुल्लू ,शमशी, भुन्तर

- *प्रत्येक उत्पादन की मात्रा का अनुमान सांकेतिक है जिनका उत्पादन बाज़ार की मांग के अनुसार कम या अधिक करना होगा I*

8	कच्चे माल की आवश्यकता एवं अनुमानित उत्पादन					
क्र०सं0	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन
1	**शॉल (80:20 धागा)**					
क	ताना बाना	kg.	28	800	22400	75 शॉल
ख	केश्मीलोंन	kg.	2.25	500	1125	
ग	वार्पिंग मजदूरी		75	25	1875	
घ	मजदूरी	दिहाड़ी	135	275	37125	
ड	पेकिंग,धुलाई अदि		75	25	1875	
	योग				**64400**	
2	**स्टॉल (80:20 धागा)**					
क	ताना बाना	kg.	36	800	28800	120 स्टॉल
ख	केश्मीलोंन	kg.	3.6	500	1800	
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	90	275	24750	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		120	20	2400	
	योग				**57750**	
3	**मफलर ऊनी**					
क	ताना बाना	kg.	13.5	1500	20250	135 मफलर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	45	275	12375	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		135	15	2025	
	योग				**34650**	

9 विपणन/बिक्री का विवरण

8.1	सम्भावित बाजारों/स्थलों के नाम	**कुल्लू, भुन्तर, मनाली**
8.2	उत्पाद की बिक्री हेतू गांव से दूरी	कुल्लू 25 कि0मी0 मनाली 65 कि0मी0 भुन्तर 14 कि0मी0
8.3	बाजार में उत्पाद की अनुमानित मांग	उत्पादन से अधिक मांग है।
8.4	बाजार को चिन्हित करने की प्रक्रिया	खुदरा दुकाने में पर्यटकों के द्वारा बड़े पेमाने पर खरीदारी की जाती है तथा स्थानीय निवासियों द्वारा शादी व अन्य समारोहों पर खरीदारी की जाती है।
8.5	मौसम में परिवर्तन के अनुसार उत्पाद की मांग की स्थिति	सर्दी में उत्पादों की मांग बढ जाती है। गर्मियों में पर्यटक द्वारा खरीदारी करने पर सामान्य रहती है।
8.6	उत्पाद के संभावित खरीदार	पर्यटक व स्थानीय निवासी
8.7	क्षेत्र में संभावित उपभोक्ता	कुल्लू, लाहौल व मण्ड़ी जिला के निवासी
8.8	उत्पाद का विपणन तंत्र	समान रुची समूह को कुल्लू, मनाली और भुंतर के खुदरा दुकानदारों के साथ विपणन के लिए जोड़ा जाएगा तथा मेलों में प्रदर्शनी / स्टॉल लगा कर विपणन किया जाएगा।
8.9	उत्पाद के विपणन हेतु रणनीति	स्थानीय बाज़ार में मांग कम होने पर उत्पादन को मंडी, शिमला के खुदरा दुकानदारों से जोड़ा जाएगा। मांग बढने या कम होने पर उत्पादन को मांग के अनुसार बढाया या कम किया जाएगा।
8.10	उत्पाद का ब्राण्ड नाम	"जय वीर नाथ " JVN
8.11	उत्पाद का "नारा"	आओ बुनें

10 समूह सदस्यों के मध्य प्रबंधन का विवरण

- प्रबन्धन के लिए नियम बनाये जाएगें।
- समूह के सदस्य आपसी सहमति से कार्यो का बंटवारा करेंगें।
- बंटवारा कार्य की कुशलता व क्षमता के आधार पर किया जाएगा।
- लाभ का बंटवारा भी कार्य की गुणवता व कुशलता तथा मेहनत के आधार पर किया जाएगा।
- विपणन में अनुभव रखने वाले सदस्य बारी–बारी से विपणन करेगे।
- प्रधान व सचिव प्रबन्धन का मुल्यांकन एवं अवलोकन समस–समय पर करते रहेगें।
- प्रारम्भ में प्रथम चक्र में 50% उत्पादन व आवर्ती व्यय करेंगे तथा दुसरे चक्र के लिए प्रथम चक्र की मजदूरी व लाभांश से आवर्ती व्यय करेंगे । इस व्यय के बाद ही शेष लाभांश का आपस में बंटवारा करेंगे । आगामी चक्रों में समान रूप से लाभांश व मजदूरी का बंटवारा करेंगे ।

11. शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)

शक्ति

1. सभी समूह सदस्य सामान व् अनुकूल सोच रखते है।
2. समूह के कुछ सदस्य छोटे पैमाने उत्पाद बनाने व विपणन का कार्य पहले से कर रही है। जिस से समूह के अन्य सदस्यों को बुनाई व विपणन में असानी होगी।
3. उत्पादन लागत कम है तथा उत्पादन मांग अधिक है।
4. सदस्यों को घर के समीप ही उपलब्ध समय में आय वृद्धि का साधन मिलेगा I

दुर्बलता : -

1. समूह के लिया नया काम है ।
2. समूह में कार्य करने का अनुभव नहीं है ।
3. सदस्यों की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है ।

अवसर : -

1. समूह में कार्य करने पर बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है।
2. स्थानीय बाज़ारों में शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर इत्यादि की पर्यटन क्षेत्र होने के कारण मांग अधिक है।
3. परियोजना द्वारा खड्डी और चरखा इत्यादि खरीदने पर 50% अथवा 75% मूल्य को वहन किया जाएगा ।
4. परियोजना द्वारा हथकरघा का प्रशिक्षण विशेषज्ञ द्वारा मौके पर या प्रशिक्षण संस्थानों में करवाया जाएगा।

जोखिम

1. समूह में आंतरिक झगडे होने पर समूह का कार्य प्रभावित हो सकता है।
2. मांग व पारदर्शता के अभाव में समूह टूटने की सम्भावना हो सकती है।
3. उत्पादों की मांग अधिकतर पर्यटकों के आगमन पर नोर्भर रहेगा I
4. हैंडलूम में स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा

12 . संभावित चुनौतियां तथा उनको कम करने के उपायों का विवरण

क0सं0	जोखिमों का विवरण	जोखिम कम करने के लिए उपाय
1	उत्पादों की स्थानीय बाज़ारों में मांग कम होने की सम्भावना हो सकती है I जिसका विक्री व् आय पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा I	शिमला, मंडी के बाज़ारों के दुकानदारों को विपणन के लिए जोड़ा जाएगा ।
2	उत्पाद की गुणवत्ता घटने से विक्री कम हो सकती है I	गुणवत्ता बनाये रखने के लिए समूह को उच्च मापदंड और कौशल अर्जित करना होगा ।
3	स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा I	गुणवत्ता व कार्य कौशल बनाये रखना होगा । विपणन की नयी संभावनाओं को तलाशते रहना होगा ।

13. परियोजना की अर्थव्यवस्था का विवरण
पूंजीगत व्यय

क्रम सं	नाम	संख्या	दर	कुल लागत	% अंश	परियोजना का अंश	लाभार्थी का अंश	योग
1	खड्डी 50"	6	15000	90000	75/25	67500	22500	90000
2	स्टैंड सहित चरखे	3	1700	5100	75/25	3825	1275	5100
3	बॉक्स	2	2000	4000	75/25	3000	1000	4000
	योग			**99100**		**74325**	**24775**	**99100**

14	**गतिविधि की अर्थव्यवस्था का व्योरा**						
	आवर्ती व्यय						
क्र०सं0	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन	कुल राशी
1	**शॉल (80:20 धागा)**						
क	ताना बाना	kg.	28	800	22400	75 शॉल	
ख	केश्मीलोंन	kg.	2.25	500	1125		
ग	वार्पिंग मजदूरी		75	25	1875		
घ	मजदूरी	दिहाड़ी	135	275	37125		
ड	पेकिंग,धुलाई अदि		75	25	1875		
					64400		**64400**
2	**स्टॉल (80:20 धागा)**						
क	ताना बाना	kg.	36	800	28800	120 स्टॉल	
ख	केश्मीलोंन	kg.	3.6	500	1800		
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	90	275	24750		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		120	20	2400		
					57750		**57750**
3	**मफलर ऊनी**						
क	ताना बाना	kg.	13.5	1500	20250	135 मफलर	
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	45	275	12375		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		135	15	2025		
					34650		**34650**
							156800
2	स्थान का किराया, बिजली बिल आदि				1200		
3	किराया कच्चा माल व तैयार माल लाना ले जाना				1700		
4	अन्य खर्चे (रिपेयर्स स्टेशनरी आदि)				550		
					3450		**3450**
	योग आवर्ती लागत						**160250**
	आवर्ती व्यय (आवर्ती लागत–मजदूरी) 160250-74250						**86000**
	कुल व्यवसाय योजना लागत 99100+86000						**185100**

4	**आय**						
	प्रत्यक्ष आय						
	शॉल		75	1149	86175		
	स्टॉल		120	601	72120		
	मफ़लर		135	302	40770		
	योग प्रत्यक्ष आय				199065		**199065**
	अप्रतयक्ष बचत या आय यदि कोई हो				19000		
	कुल अनुमानित आय				218065		**218065**

15	**अर्थव्यवस्था का सारांश**			
	उत्पादन की लागत			
1	कुल आवर्ती लागत	160250		
2	पूंजीगत व्यय पर 10% वार्षिक ह्रास	990		
3	बैंक ऋण पर 12% ब्याज वार्षिक	1459		
	योग	**162699**		**162699**

16	**वित्तीय सारांश**							
	विक्रय मूल्य की गणना प्रति वस्तु तथा कुल उत्पादन की विक्री से आय							
क्र०सं0	मद	अनुमानित उत्पादन संख्या	उत्पादन की लागत	लाभ प्रतिशत	लाभांश	कुल विक्रेय मूल्य (3+5)	बाज़ार विक्रय दर	कुल उत्पादन की विक्री से आय
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	शॉल	75	858	35	300	1158	1350	86873
2	स्टॉल	120	481	25	120	601	700	72150
3	मफ़लर	135	256	18	46	302	400	40781
	बिक्री से आय का योग							**199803**
17	**मूल्य–लाभ विश्लेषण (एक चक्र =1 महीना)**							
	मद					**राशी**	**कुल राशी**	
	पूंजीगत व्यय पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास					990	**990**	
	आवर्ती लागत							
	कमरे का किराया, बिजली खर्चा अदि					1200		
	मजदूरी					74250		
	कच्चा माल					83025		
	अन्य खर्चे (रिपेयर, स्टेशनरी अदि)					550		
	परिवेहन खर्चे सामान कच्चा व तैयार					1700		
	पेकिंग, ड्राई क्लीनिंग आदि व्यय					8175		
	योग					168900	**168900**	

	कुल लाभ 199803-(990+160250)				**38563**
	उत्पाद विक्री से कुल लाभ (लाभ+मजदूरी+किराया) 38863+74250+1700				**114813**
	एक माह पश्चात् समूह में वितरण योग्य राशी (उत्पादों से आय– (ओसत मूलधन व ब्याज वापसी+दुसरे चक्र हेतु राशी+आवर्ती व्यय) =199803-(2115+71+86000)				**111617**
	उत्पादन आधा होने पर समूह में बाँटने योग्य राशी=उत्पाद विक्री का 50%-(मूलधन व ब्याज वापसी+दुसरे चक्र हेतु राशी+आवर्ती व्यय) =99901-(2115+71+86000)				**11715**
18	**धनराशी की आवश्यकता**				
क	**समूह की पहले माह की आवश्यकता**				
क्र०सं0	**मद**	**राशी**			
1	पूंजीगत व्यय	99100			
2	आवर्ती व्यय का 50%	43000			
	योग	142100			
	अथवा	**142000**			
ख	**समूह के वित्तीय साधन**				
क्र०सं	**वित्तीय प्रबंध का विवरण**			**राशी**	
1	परियोजना द्वारा पूंजीगत व्यय का अनुदान			74323	
2	समूह के सदस्यों का नकद योगदान			24775	
3	बैंक से ऋण			23900	
4	समूह की वचत			19000	
	योग			142000	

**बैंक से ऋण लेने के लिए परियोजना द्वारा 1,00,000 परिक्रिमी निधि प्रदान की जायेगी तथा इसके इलावा आवर्ती व्यय के लिए 23900 रुपए बैंक से ऋण लिया जाएगा /*

19. सम विच्छेदन बिन्दू (ब्रेक इविन प्वाइन्ट) की गणनाः

ब्रेक इवन पॉइंट = 300 + 120 + 46 [लाभ (एक शॉल + एक स्टॉल + एक बॉर्डर+ एक मफलर)] = 466

अत: ब्रेक इवन पॉइंट = 99100 / 466 = 212 दिन अर्थात 7 महीने

प्रत्येक शॉल, स्टॉल और मफलर के लाभ की गणना पर सम विच्छेदन बिन्दू 212 दिनों अथवा सात महीनों में उपरोक्त अनुपात में विक्रय करने पर प्राप्त किया जा सकता है।

20. बैंक से ऋण वापसी का किश्तवार नियोजन

क0स0	माह	ऋण वापसी						संचय ऋण वापसी	अवशेष ऋण		
		मूल धन	कुल ब्याज	परियोजना द्वारा 5 % ब्याज देय	समूह द्वारा शेष ब्याज 7% देय	समूह द्वारा प्रति माह देय किश्त	कुल मूलधन वापसी		मुलधन	12 प्रतिशत ब्याज	कुल
1	माह 1								23900	239	24139
2	माह 2	2100	239	100	139	2339	2200	2500	21800	218	22018
3	माह 3	2109	218	91	127	2327	2200	5000	19690	197	19887

4	माह 4	2118	197	82	115	2315	2200	7500	17572	176	17748
5	माह 5	2127	176	73	103	2303	2200	10000	15446	154	15600
6	माह 6	2136	154	64	90	2290	2200	12500	13310	133	13443
7	माह 7	2145	133	55	78	2278	2200	15000	11165	112	11277
8	माह 8	2153	112	47	65	2265	2200	17500	9012	90	9102
9	माह 9	2162	90	38	53	2253	2200	20000	6850	68	6918
10	माह 10	2171	68	29	40	2240	2200	22500	4678	47	4725
11	माह 11	2181	47	19	27	2227	2200	25000	2498	25	2523
12	माह 12	2190	25	10	15	2215	2200	4354	0	0	0
13	माह 13	308	0	0	0	308	300	0	0	0	0
	योग	**23900**	**1459**	**608**	**851**	**25359**	**23900**	**0**	**0**	**1459**	**0**

- 12% वार्षिक ब्याज की गणना प्रतिमाह घटते हुए मूलधन के आधार पर की गई है।
- समायोजन के कारण अंतिम ई.एम.आई. नियमित ई.एम.आई. से कम हो सकती है।
- टर्म लोन के अतिरिक्त और भी अन्य विकल्पों सी०सी०एल० आदि पर आवश्यकता पड़ने पर निर्णय लिया जाएगा जिसमें भी समूह को कम से कम ब्याज का भुगतान करना पड़े ।

- समूह आवर्ती व्यय का 50% बैंक से ऋण के रूप में पहले माह लेंगे तथा प्रथम माह में 50% उत्पादन करेंगे। इसके बाद दुसरे माह में उत्पाद के विक्रय होने पर 100% आवर्ती खर्चा तथा उत्पादन करेंगे। आवर्ती खर्चे उत्पादन के विक्रय से वह लाभ से करेंगे।
- 50% उत्पादन व विक्री करने पर लाभ व मजदूरी के साथ 138327 रुपए को नहीं बाटेंगे तथा इस से अगले चक्र के लिए आवर्ती व्यय को बचा कर रखेंगे। अत: प्रथम माह केवल 11715 रुपए की राशी का बटवारा करेंगे।
- पूंजीगत व्यय का 25% समूह के सदस्य नकदी CASH के रूप में देंगे तथा 75% परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा ।
- बैंक ऋण लेने पर ब्याज की दर में से 5% ब्याज परियोजना द्वारा सीधे बैंक के खाते में जमा किया जाएगा। शेष ब्याज समूह द्वारा अदा किया जाएगा जिससे समूह की 1459 रुपए की बचत होगी।

स्वयं सहायता समूह वीर नाथ के नियम

1. समूह का काम : हथकरघा (शॉल, स्टॉल और मफलर)
2. समूह का पता : गाँव न्यूल, डाकघर न्यूल , तहसील और जिला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।
3. समूह के कुल सदस्य : 18 (सभी महिलाएं)
4. समूह की पहली बैठक की तिथि ; 27.11.2020.
5. समूह में हर 100 रूपए पर 2 रूपए ब्याज होगा।
6. समूह की मासिक बैठक हर माह की 5 तिथि को होगी।
7. समूह के सभी सदस्य हर माह की बचत की गई राशि को समूह में जमा करेगें।
8. स्वय सहायता समूह की बैठक में सभी सदस्य को शामिल होना पड़ेगा।
9. स्वय सहायता समूह का खाता काँगड़ा सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक बैंक शाखा बजौरा में खोला है खाता संख्या नंबर 9805811431 है।

10. समूह की बैठक में गेर हाज़िर रहने के लिए प्रधान व सचिव को उचित कार्य बता कर अनुमति लेनी होगी।
11. समूह में जो बचत की राशी जमा नहीं करवाते या 3 बेठकों तक समूह से गेर हाज़िर रहते है तो उस महिला को समूह से निकाल दिया जाऐगा।
12. समूह में जो व्यक्ति कारण बताए वगेर गेर हाज़िर रहता है तो अगली बैठक उस व्यक्ति के घर में होगी जिसका खर्च उस व्यक्ति को खुद करना होगा अगर दो सदस्य होगें तो खर्च मिल कर देना होगा।
13. भविष्य में स्वंय सहायता समूह के प्रधान व सचिव सर्व सहमति से चुने जाऐगें।
14. प्रधान व सचिव बैंक से लेन देन कर सकते है यह पद एक वर्ष तक मान्य होगा।
15. प्रधान, सचिव या सदस्य समूह के विरूद्व कोई काम नही करेगा समूह की रकम का सदा सदुपयोग करेगें।
16. अगर सदस्य किसी कारणवश समूह को छोड़ना चाहता है अगर इस व्यक्ति ने ऋण लिया है तो समूह को वापिस करना होगा तभी समूह को छोड़ समता है अन्यथा नही
17. ऋण का उदेश्य रकम की चुकोती का समय ऋण की किश्त और ब्याज की दर बैठक में तय की जाएगी।
18. आपातकालीन स्थिति के लिए प्रधान व सचिव के पास कम से कम 1000 रूपये की राशी होनी चाहिए।
19. स्वंय सहायता समूह के रजिस्टर को सभी सदस्यों के सामने पढ़ा व लिखा जाना चाहिए।
20. बड़ें ऋण लेने वालों को एक सप्ताह पहले की सूचना देनी होगी।
21. ऋण जरूरत के समय सभी सदस्यों को मिलना चाहिए।
22. अगर सदस्य बिना कारण से समूह को छोड़ना चाहता है तो उस सदस्य की जमा राशी समूह में बांटी जाएगी।
23. समूह को अपनी मासिक रिपोर्ट प्रति माह तकनीकी क्षेत्रीय इकाई (Field Technical Unit) के कार्यालय में देनी होगी।

समूह का सहमती पत्र

आज दिनाकं 04-12-2024 को वीर नाथ स्वयं सहायता समूह की बैठक हुई। बैठक में प्रधान श्रीमती बेगमू देवी की अध्यक्षता में हुई जिसमे समूह के सदस्यों ने सर्व सहमती से निर्णय लिया कि आय बढाने के लिए शॉल, स्टॉल और मफलर बुनाई का कार्य करने के लिए **हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तन्त्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना** (जाईका वित्तपोषित) से जुड़ने की सहमती प्रदान करते है तथा उपरोक्त परियोजना की सहायता से सभी सदस्यों द्वारा चयनित की गई गतिविधि जो कि हथकरघा बुनाई है, को इसकी व्यवसाय योजना के अनुसार या बाज़ार की मांग के अनुसार सभी सदस्य मिलजुल कर सफल बनायेंगे।

Reshma Devi
समूह के सचिव के हस्ताक्षर

बेगमू देवी
समूह के प्रधान के हस्ताक्षर

हस्ताक्षर
प्रधान,
जैव विविधता उपसमिति
....

फील्ड तकनीकी यूनिट (FTU)
कुल्लू ।

स्वीकृत

कुल्लू मंडलीय प्रबंधन इकाई (DMU)
Divisional Management Unit Officer
-cum Divisional Forest Officer,
वन्यप्राणी मंडल, कुल्लू
Wild Life Division, Kullu

स्वयं सहायता समूह वीर नाथ (न्यूल उप समिति) सदस्यों के फोटोग्राफ